vinetur

फ्रांस के रेड वाइन क्षेत्र व्हाइट वाइन के लिए बना रहे हैं जगह

Bordeaux से Loire तक, बढ़ती मांग के लिए अपेलेशन नियमों, रोपण योजनाओं और वाइनरी रणनीतियों में बदलाव कर रहे हैं।

बुधवार, 7 अक्टूबर 2026



लंबे समय से रेड वाइन उत्पादन के लिए पहचाने जाने वाले फ्रांस के वाइन क्षेत्र अब व्हाइट वाइन के लिए अधिक जगह बना रहे हैं। La Revue du vin de France की रिपोर्ट के अनुसार, उत्पादक और अपेलेशन समूह मांग में बदलाव के जवाब में यह कदम उठा रहे हैं।

कई मशहूर क्षेत्रों में यह बदलाव दिखाई दे रहा है। पत्रिका की रिपोर्ट के मुताबिक, दक्षिणी फ्रांस में Terrasses du Larzac अपने अपेलेशन के तहत व्हाइट वाइन की अनुमति देने के लिए अंतिम मंजूरी का इंतजार कर रहा है। यह मंजूरी 2026 या 2027 में मिल सकती है। Loire Valley में Bourgueil शेनिन की वापसी का समर्थन कर रहा है। इस सफेद अंगूर की किस्म की इस क्षेत्र में गहरी जड़ें हैं। Bordeaux में Médoc की व्हाइट वाइन पर हो रहे विकास पर नजर रखी जा रही है। इसे इस बात का संकेत माना जा रहा है कि रेड वाइन के प्रभुत्व वाले क्षेत्र की बोतलों में व्हाइट वाइन की व्यावसायिक

संभावनाएं कई उत्पादकों की पहले की अपेक्षा से अधिक हो सकती हैं।

इन कदमों को मिलाकर देखें तो फ्रांस के वाइन उद्योग के कुछ हिस्सों में व्यापक बदलाव का संकेत मिलता है। रेड वाइन की पहचान के आधार पर बने अपेलेशन उस इतिहास को छोड़ नहीं रहे हैं, लेकिन कुछ बाजार के अनुरूप ढलने की कोशिश कर रहे हैं, जहां उत्पादकों और खरीदारों—दोनों के लिए व्हाइट वाइन का महत्व बढ़ा है। यह बदलाव सिर्फ स्वाद या ब्रांडिंग तक सीमित नहीं है। इसका असर रोपण के फैसलों, वाइनरी के उपकरणों, अंगूर के बागों की रणनीति और उन औपचारिक नियमों पर पड़ सकता है जो तय करते हैं कि किसी अपेलेशन के तहत क्या उत्पादन किया जा सकता है।

फ्रांस में इस तरह के बदलाव अपेलेशन प्रणाली से गहराई से जुड़े हैं। अपेलेशन के उत्पादन नियम तय करते हैं कि किन अंगूरों का इस्तेमाल किया जा सकता है, कौन-सी शैलियां अनुमत हैं और क्षेत्र का नाम हासिल करने के लिए वाइन कैसे बनाई जानी चाहिए। इसलिए, सिर्फ रेड या मुख्य रूप से रेड वाइन के उत्पादन से व्हाइट वाइन की ओर बढ़ने के लिए आम तौर पर लंबी नियामक प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। उत्पादकों के लिए ऐसे बदलाव का समर्थन करने का फैसला कई वर्षों के निवेश को नया रूप दे सकता है, क्योंकि अंगूर की बेलें, वाइनरी में जगह और विपणन योजनाएं—सभी अपेलेशन कानून की अनुमत श्रेणियों के आधार पर तय होती हैं।

Terrasses du Larzac इस समय जारी ऐसी प्रक्रिया के सबसे स्पष्ट उदाहरणों में से एक है। यह अपेलेशन Languedoc की रेड वाइन से व्यापक रूप से जुड़ा है। La Revue du vin de France के अनुसार, यह अब व्हाइट वाइन के लिए अंतिम मंजूरी का इंतजार कर रहा है और फैसला 2026 या 2027 में आने की उम्मीद है। मंजूरी मिलने पर यह उस क्षेत्र के लिए उल्लेखनीय बदलाव होगा, जिसकी छवि काफी हद तक रेड वाइन पर बनी है। इससे उत्पादकों को उस श्रेणी में अपनी जगह बनाने का नया रास्ता भी मिलेगा, जहां कई बाजारों में उपभोक्ताओं की दिलचस्पी अधिक रही है।

Bourgueil का मामला अलग है, हालांकि इससे जुड़ा हुआ है। Loire का यह अपेलेशन cabernet franc से बनी रेड वाइन के लिए सबसे अधिक जाना जाता है। लेकिन शेनिन की वापसी की कथित पहल अतीत से पूरी तरह नाता तोड़ने के बजाय क्षेत्र के व्हाइट वाइन इतिहास को फिर से खोलने का संकेत देती है। व्यावहारिक तौर पर, शेनिन को फिर से केंद्र में लाने से उन एस्टेट्स के लिए नए अवसर बन सकते हैं जो अपनी वाइन की रेंज और बिक्री का मिश्रण बढ़ाना चाहते हैं। इससे उन उत्पादकों को भी आकर्षित किया जा सकता है जो वाइन के एक से अधिक रंग और शैली में कारोबार फैलाकर जोखिम कम करना चाहते हैं।

Bordeaux की वैश्विक छवि में अपनी जगह के कारण Médoc का विशेष महत्व है। यह क्षेत्र फ्रांसीसी रेड वाइन के सबसे मजबूत प्रतीकों में से एक है, लेकिन अब व्यापार जगत के कुछ लोगों को वहां व्हाइट वाइन में बाजार की अच्छी संभावनाएं दिख रही हैं। La Revue du vin de France ने व्हाइट Médoc को इस बात के प्रमाण के तौर पर पेश किया कि रेड वाइन के लिए मशहूर क्षेत्रों की व्हाइट वाइन भी बाजार में अनुकूल जगह बना सकती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हर उत्पादक एक ही तरीके से या एक ही रफ्तार से बदलाव करेगा, लेकिन इससे संकेत मिलता है कि व्हाइट वाइन के अर्थशास्त्र को पारंपरिक रेड वाइन क्षेत्र अब आसानी से नजरअंदाज नहीं कर सकते।

पेय क्षेत्र के लिए यह रुझान इसलिए अहम है क्योंकि इससे उत्पादकों के पूंजी आवंटन और वितरकों के पोर्टफोलियो बनाने के तरीके बदल सकते हैं। व्हाइट वाइन की ओर बढ़ने के लिए अंगूर की अलग सामग्री, वाइन बनाने के अलग विकल्प और कुछ मामलों में भंडारण या तापमान नियंत्रण की नई व्यवस्था की जरूरत हो सकती है। इससे अपेलेशन निकायों और सार्वजनिक प्राधिकरणों को उन तकनीकी नियमों में संशोधन करना पड़ सकता है जो बाजार के किसी दूसरे संतुलन को ध्यान में रखकर बनाए गए थे। अगर रेड वाइन पर केंद्रित और क्षेत्र भी ऐसे बदलाव चाहते हैं, तो फ्रांस के वाइन अपेलेशन में आपूर्ति और मांग के तालमेल की व्यापक समीक्षा हो सकती है।

इन फैसलों के पीछे का व्यावसायिक तर्क सीधा-सादा दिखता है। कई बाजारों में व्हाइट वाइन विकास का अहम क्षेत्र बन गई है, जबकि रेड वाइन की कुछ श्रेणियों में मांग धीमी रही है। इसलिए मशहूर रेड वाइन क्षेत्रों के उत्पादकों के पास यह परखने का प्रोत्साहन है कि उनकी जमीन, प्रतिष्ठा और वितरण नेटवर्क बेहतर बिक्री या कीमत की संभावनाओं वाली

व्हाइट वाइन को सहारा दे सकते हैं या नहीं। उन क्षेत्रों में यह बदलाव खास तौर पर महत्वपूर्ण है जहां जगह के नाम की प्रतिष्ठा नई व्हाइट वाइन श्रेणी को कम प्रसिद्ध क्षेत्र की तुलना में तेजी से ध्यान दिला सकती है।

इसके बावजूद, बदलाव आसान होने की संभावना नहीं है। अपेलेशन में संशोधन अक्सर पहचान, शैली और स्थापित प्रतिष्ठा के संरक्षण से जुड़े सवाल खड़े करते हैं। कुछ उत्पादक व्हाइट वाइन को जरूरी बदलाव के तौर पर देख सकते हैं, जबकि दूसरों को चिंता हो सकती है कि इससे क्षेत्र की विशिष्ट पहचान कमजोर होगी। फ्रांसीसी वाइन जगत में ऐसे मतभेद आम हैं, जहां बाजार का दबाव और विरासत अक्सर साथ-साथ चलते हैं, लेकिन हमेशा एक ही गति से नहीं।

यह स्पष्ट है कि अब यह बहस सीमित प्रयोगों तक नहीं रही। Terrasses du Larzac अंतिम फैसले का इंतजार कर रहा है, Bourgueil शेनिन पर फिर विचार कर रहा है और Médoc व्यावसायिक मिसाल पेश कर रहा है—ऐसे में उन जगहों की रणनीतिक चर्चा में व्हाइट वाइन शामिल हो रही है, जिन्होंने रेड वाइन के दम पर अपनी पहचान बनाई। उत्पादकों, व्यापारियों और निवेशकों के लिए यह चर्चा अब परंपरा जितनी ही अर्थशास्त्र से भी जुड़ी है।